पाठ – स्वदेश

पाठ सार

इस कविता में कवि ने बताया है कि जिसके मन में देश के लिए प्रेम नहीं है, उसका जीवन व्यर्थ है। ऐसा हृदय पत्थर जैसा है, जिसमें कोई भावना नहीं होती। बिना जोश और साहस के कोई बड़ी सफलता नहीं मिल सकती।

कवि कहते हैं कि जो अपने समाज और देश का भला नहीं करता, वह खुद भी आगे नहीं बढ़ सकता। ऐसे लोग केवल अपने लिए जीते हैं और उनका जीवन न तो समाज के लिए उपयोगी होता है और न ही देश के लिए।

फिर कवि भारत की महानता का वर्णन करते हैं। यही वह भूमि है जहाँ हम जन्मे, पले-बढ़े और जिसने हमें अन्न, जल, संस्कृति और गौरवशाली इतिहास दिया। इस देश की मिट्टी में अपार शक्ति और संपदा है। इस धरती से प्रेम न करना सबसे बड़ी भूल है।

अंत में कवि कहते हैं कि मृत्यु सभी को आती है, लेकिन जो देश के लिए मरता है वह अमर हो जाता है। इसलिए हमें साहस और शक्ति के साथ अपने कर्तव्य निभाने चाहिए और देश के लिए जीना-मरना चाहिए।

पाठ व्याख्या

1. वह हृदय नहीं है पत्थर है,
   जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
   जो जीवित जोश जगा न सका,
   उस जीवन में कुछ सार नहीं।
   जो चल न सका संसार-संग,
   उसका होता संसार नहीं।।
   जिसने साहस को छोड़ दिया,
   वह पहुँच सकेगा पार नहीं।

शब्दार्थ-

स्वदेश	–	अपना देश
सार	–	महत्व, मूल्य
साहस	–	हिम्मत, बहादुरी
पार	–	सफलता तक पहुँचना, मंज़िल तक पहुँचना

व्याख्या– *प्रस्तुत पँक्तियों में कवि कहते हैं कि जिस हृदय में अपने देश के लिए प्रेम नहीं है, वह पत्थर के समान है, यानी उसमें कोई भावना नहीं है। ऐसा जीवन जिसमें कोई उत्साह और जोश नहीं है, वह व्यर्थ है, अर्थात् ऐसा व्यक्ति जिसके हृदय में देशभक्ति के लिए जोश नहीं है उसका जीवन व्यर्थ है।*

कवि आगे कहता है कि जो व्यक्ति दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चलता, वह समाज में अपना स्थान नहीं बना सकता। जो लोग साहस छोड़ देते हैं, वे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते अर्थात् जो व्यक्ति हार मान लेते हैं वे जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते।

2. जिससे न जाति- उद्धार हुआ,
   होगा उसका उद्धार नहीं।।

जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ॥

शब्दार्थ-

जाति	–	समाज, समुदाय
उद्धार	–	भलाई, उन्नति, कल्याण
भावों	–	भावनाओं, संवेदनाओं
रस-धार	–	भावनाओं की मधुर धारा, प्रेम की लहर

व्याख्या- *प्रस्तुत पँक्तियों में कवि कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने समाज और जाति का उद्धार नहीं कर सका, उसका स्वयं का भी उद्धार नहीं हो सकता। अगर किसी व्यक्ति के हृदय में कोमल भावनाएँ और प्रेम नहीं है, तो वह जीवन व्यर्थ है। जिस हृदय में अपने देश के प्रति प्यार नहीं है, वह संवेदनहीन पत्थर के समान है।*

3. जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,
पाया जिसमें दाना-पानी।
हैं माता-पिता बंधु जिसमें,
हम हैं जिसके राजा-रानी॥
जिसने कि खजाने खोले हैं,
नव रत्न दिये हैं लासानी।
जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,
जिस पर है दुनिया दीवानी॥

शब्दार्थ-

दाना-पानी	–	भोजन और पानी, जीवन-निर्वाह के साधन
बंधु	–	भाई-बंधु, रिश्तेदार
खजाने	–	धन-सम्पत्ति
नव रत्न	–	नए और अनमोल रत्न
लासानी	–	अनोखे, बेजोड़, जिनकी कोई तुलना न हो
ज्ञानी	–	विद्वान व्यक्ति

व्याख्या- *प्रस्तुत पँक्तियों में कवि उस भूमि की महिमा गाता है जहाँ हम जन्मे हैं, पले-बढ़े हैं और जिसने हमें अन्न-पानी दिया है। यही भूमि हमारे माता-पिता और संबंधियों की भूमि है। हम इसी देश के नागरिक हैं और यहीं राजा-रानी जैसे जीते हैं। इस देश ने हमें अनमोल खजाने और ज्ञान के रत्न दिए हैं। भारत की संस्कृति, ज्ञान और परंपरा इतनी महान है कि पूरी दुनिया इसे सराहती है।*

4. उस पर है नहीं पसीजा जो,
क्या है वह भू का भार नहीं।

निश्चित है निस्संशय निश्चित,
है जान एक दिन जाने को।
है काल- दीप जलता हरदम,
जल जाना है परवानों को॥
सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ॥

शब्दार्थ-

पसीजा – दया आना, कोमल भावना जागी
भू – धरती, पृथ्वी
निश्चित – तय, पक्का
निस्संशय – बिना संदेह के, निश्चित रूप से
जान – प्राण, जीवन
काल-दीप – मृत्यु का प्रतीक दीपक, समय की जलती लौ
परवानों – दीवाने, बलिदान देने वाले
तोप – युद्ध में प्रयोग होने वाला भारी हथियार

व्याख्या- *प्रस्तुत पँक्तियों में कवि कहते हैं कि जिस व्यक्ति के हृदय में देश के प्रति करुणा और प्रेम का भाव नहीं है वह वास्तव में इस धरती पर एक बोझ है। कवि आगे कहते हैं कि यह तो सभी को पता है कि मृत्यु निश्चित है तो क्यों न देश की सेवा करें, ऐसा जीवन जियें जो देश के काम आए। जैसे दीपक में परवाना जल जाता है, वैसे ही देशभक्त जीवन की आहुति देकर देश की सेवा करते हैं। हमारे पास सब कुछ है, हथियार, साहस और बलिदान की शक्ति। इसलिए अगर किसी के हृदय में देशप्रेम नहीं है, तो वह हृदय नहीं, पत्थर है।*

पाठ से

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं-

प्रश्न 1. "वह हृदय नहीं है पत्थर है" इस पंक्ति में हृदय के पत्थर होने से तात्पर्य है-

- सामाजिकता से
- संवेदनहीनता से
- कठोरता से
- नैतिकता से

उत्तर:

- संवेदनहीनता से (★)

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन – सा विषय इस कविता का मुख्य भाव है?

- देश की प्रगति
- देश के प्रति प्रेम
- देश की सुरक्षा
- देश की स्वतंत्रता

उत्तर:

- देश के प्रति प्रेम (★)

प्रश्न 3. "हम हैं जिसके राजा-रानी" – इस पंक्ति में 'हम' शब्द किसके लिए आया है?

- देश के प्राकृतिक संसाधनों के लिए
- देश की शासन व्यवस्था के लिए
- देश के समस्त नागरिकों के लिए
- देश के सभी प्राणियों के लिए

उत्तर:

- देश के समस्त नागरिकों के लिए (★)

प्रश्न 4. कविता के अनुसार कौन-सा हृदय पत्थर के समान है?

- जिसमें साहस की कमी है
- जिसमें स्नेह का भाव नहीं है
- जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है
- जिसमें स्फूर्ति और उमंग नहीं है

उत्तर:

- जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं है (★)

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ विचार कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर:

1. **'संवेदनहीनता से'** इसलिए चुना गया है क्योंकि हृदय पत्थर नहीं बन सकता। यहाँ 'पत्थर' भावनाओं की कमी का प्रतीक है यानी देश-प्रेम न होना।
2. **'देश के प्रति प्रेम'** चुना गया है क्योंकि पूरी कविता में यही मुख्य भावना दिखाई देती है।
3. **'हम हैं जिसके राजा-रानी'** इसलिए चुना गया है क्योंकि देश पर सभी नागरिकों का समान अधिकार है।
4. **'जिसमें देश-प्रेम का भाव नहीं'** इसलिए चुना गया है क्योंकि कवि के अनुसार ऐसा हृदय पत्थर के समान, यानी भावनाओं से खाली होता है।

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों का उनके सही अर्थ या संदर्भों से मिलान कीजिए।

क्रम	स्तंभ 1	स्तंभ 2
1.	जिसने साहस को छोड़ दिया, वह पहुँच सकेगा पार नहीं।	1. जिस देश की ज्ञान-संपदा से समूचा विश्व प्रभावित है।
2.	जो जीवित जोश जगा न सका, उस जीवन में कुछ सार नहीं।	2. जिस प्रकार युद्ध में तोप और तलवार की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मनुष्य की प्रगति के लिए साहस और इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है।
3.	जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं, जिस पर है दुनिया दीवानी।	3. जिसने किसी कार्य को करने का साहस छोड़ दिया हो वह किसी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता।
4.	सब कुछ है अपने हाथों में, क्या तोप नहीं तलवार नहीं।	4. जो स्वयं के साथ ही दूसरों को भी प्रेरित और उत्साहित नहीं कर सकते उनका जीवन निष्फल और अर्थहीन है।

उत्तर:

1. → 3
2. → 4
3. → 1
4. → 2

पंक्तियों पर चर्चा

कविता से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "निश्चित है निस्संशय निश्चित,
है जान एक दिन जाने को।
है काल- दीप जलता हरदम,
जल जाना है परवानों को।।"

उत्तर:

भावार्थ – कवि कहते हैं कि मृत्यु एक दिन सबको आनी है। जैसे दीपक में परवाना जलकर नष्ट हो जाता है, वैसे ही मनुष्य को भी मरना है। इसलिए जीवन को व्यर्थ न गँवाकर देश के लिए बलिदान करना सबसे अच्छा है।

*** मुख्य संदेश** – मृत्यु निश्चित है, तो क्यों न उसे देश की रक्षा में गौरव से अपनाया जाए।

(ख) “सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।।”

उत्तर:

भावार्थ – कवि इन पंक्तियों के माध्यम से आत्मबल, साहस और देशभक्ति की भावना का संदेश देते हैं। उनका कहना है कि हमारे पास सब कुछ है – शक्ति, साधन, आत्मविश्वास – तो फिर हमें किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। परंतु अगर किसी के दिल में अपने देश के लिए प्रेम नहीं है, तो वह हृदय नहीं, बल्कि एक पत्थर है, जिसमें भावनाएँ नहीं।

*** मुख्य संदेश** – देश की रक्षा और सेवा के लिए आत्मबल और साधन हमारे पास हैं, बस ज़रूरत है सच्चे देश-प्रेम की।

(ग) “जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ॥ ‘

उत्तर:

भावार्थ – कवि कहते हैं कि जिस हृदय में देश-प्रेम और भावनाएँ नहीं हैं, वह हृदय नहीं बल्कि पत्थर है। रस-धार का अर्थ है भावनाओं की लगातार बहती धारा। जो व्यक्ति देश के लिए भावुक नहीं हो सकता, उसमें मानवता नहीं होती, केवल जड़ता होती है।

*** मुख्य संदेश** – भावनाओं और देश-प्रेम से ही हृदय जीवंत होता है, वरना वह केवल पत्थर समान है।

सोच-विचार के लिए

कविता को पुनः ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) हम हैं जिसके राजा-रानी” पंक्ति में राजा – किसे और क्यों कहा गया है?

उत्तर: इस पंक्ति में ‘हम’ से आशय भारतवासियों से है। कवि कहते हैं कि हमारा देश इतना गौरवशाली और महान है कि हम इसके उत्तराधिकारी हैं। यह हमारे लिए गर्व की बात है और हमें देश के लिए महान कार्य करने की प्रेरणा देता है।

(ख) ‘संसार-संग’ चलने से आप क्या समझते हैं? जो व्यक्ति ‘संसार – संग’ नहीं चलता, संसार उसका क्यों नहीं हो पाता है?

उत्तर: ‘संसार-संग’ का मतलब है समाज के साथ मिल-जुलकर रहना और अपने कर्तव्य निभाना। जो व्यक्ति समाज से अलग रहता है, वह स्वार्थी बन जाता है और समाज में उसका कोई स्थान नहीं रह जाता।

(ग) “उस पर है नहीं पसीजा जो / क्या है वह भू का भार नहीं” पंक्ति से आप क्या समझते हैं? बताइए।

उत्तर: कवि कहता है कि जो व्यक्ति अपने देश से जुड़ा नहीं है और उसकी चिंता नहीं करता, उसका जीवन व्यर्थ है। ऐसा इंसान धरती पर सिर्फ बोझ है, क्योंकि उसका जीवन देश या समाज के काम नहीं आता। 'पसीजा' का अर्थ है – भावनाओं से द्रवित होना या जुड़ना।

(घ) कविता में देश-प्रेम के लिए बहुत-सी बातें आई हैं। आप 'देश-प्रेम' से क्या समझते हैं? बताइए।
उत्तर: 'देश-प्रेम' का मतलब है – अपने देश से सच्चा लगाव रखना, उसकी तरक्की के लिए काम करना, कठिन समय में त्याग करना और उसकी भाषा, संस्कृति व लोगों का सम्मान करना। कविता में कवि कहता है कि जिस दिल में देश-प्रेम नहीं है, वह पत्थर जैसा है। देश-प्रेम ही जीवन को सार्थक बनाता है।

(ङ) यह रचना एक आह्वान गीत है जो हमें देश-प्रेम के लिए प्रेरित और उत्साहित करती है। इस रचना की अन्य विशेषताएँ ढूँढ़िए और लिखिए।
उत्तर: **कविता की विशेषताएँ**

1. **सरल भाषा** – कविता की भाषा आसान और प्रभावशाली है।
2. **भावना** – यह कविता दिल को छूती है और देश के प्रति प्रेम जगाती है।
3. **प्रतीक** – 'पत्थर', 'परवाना', 'तोप-तलवार' जैसे प्रतीकों से गहरे अर्थ बताए गए हैं।
4. **शिक्षा** – कविता हमें साहस, बलिदान, समाज सेवा और देश-प्रेम का महत्व समझाती है।
5. **देश की महिमा** – इसमें देश की मिट्टी, संस्कृति और महान लोगों की विशेषताओं का वर्णन है।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए और लिखिए।
(क) "जिसने कि खजाने खोले हैं" अनुमान करके बताइए कि इस पंक्ति में किस प्रकार के खजाने की बात की गई होगी?
उत्तर: देश के लिए कहा गया है कि यह धरती हमें अनगिनत पदार्थ प्रदान करती है।

(ख) "जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े" पंक्ति में 'उगे-बढ़े' किसके लिए और क्यों कहा गया होगा?
उत्तर: 'उगे-बढ़े' हम सबके लिए कहा गया है कि हम इस धरती पर पल बढ़कर बड़े हुए हैं।

(ग) वह हृदय नहीं है पत्थर है" पंक्ति में 'हृदय' के लिए 'पत्थर' शब्द का प्रयोग क्यों किया गया होगा?
उत्तर: 'हृदय' के लिए 'पत्थर' शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है कि कवि का मानना है जिस हृदय में देश के लिए प्रेम नहीं होता वह पत्थर के समान होता है।

(घ) कल्पना कीजिए कि पत्थर आपको अपनी कथा बता रहा है। वो आपसे क्या-क्या बातें करेगा और आप उसे क्या-क्या कहेंगे?
(संकेत – पत्थर – जब मैं नदी में था तो नदी की धारा मुझे बदलती भी थी।...)
उत्तर:

पत्थर और मैं

पत्थर – जब मैं नदी में जाती, नदी की धारा मुझे बदलती भी थी।

मैं – अच्छा! वह कैसे?

पत्थर – अरे नदी की धारा में लुढ़क – लुढ़क कर में घिस जाता था।

मैं – अरे! फिर तो तुम्हारा रूप बदल जाता होगा।

पत्थर – हाँ, बालू .... वह मेरा हो देखते हो घिसा हुआ रूप ही तो है।

पत्थर – पर खुशी तब होती थी, जब नदी के जल के साथ लुढ़क – लुढ़ककर मेरे सारे नुकीले कोने घिस जाते और मैं कोई-न-कोई सुंदर आकार ले लेता।

मैं – और बालू भी तो मनुष्य के लिए घर बनाने के लिए उपयोगी होती है। पर तुम्हें दर्द तो होता होगा।

पत्थर – हाँ भाई/बहन, दर्द तो बहुत होता है। लुढ़कने का दर्द, घिसने का दर्द सब सहन करना पड़ता है, लेकिन जब मेरा आकार सुंदर हो जाता है तो खुशी भी होती है। कई बार तो लोग मुझे अपने बगीचे या घरों में सजाने के लिए भी नदी किनारों से उठा लेते हैं।

मैं – धन्यवाद पत्थर! तुमसे बात करके बहुत अच्छा लगा। तुम्हारे विचार बहुत ही सकारात्मक है।

(ङ) देश-प्रेम की भावना देश की सुरक्षा से ही नहीं, बल्कि संरक्षण से भी जुड़ी होती है। अनुमान करके बताइए कि देश के किन-किन संसाधनों या वस्तुओं आदि को संरक्षण की आवश्यकता है और क्यों?

उत्तर: निम्नलिखित संसाधनों एवं वस्तुओं का संरक्षण देश के हित के लिए अनिवार्य है-

1. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षक – जल, वन, खनिज पदार्थ और धरती ये हमारे जीवन की बुनियादी जरूरतें हैं। यदि हम इनका दुरुपयोग करेंगे तो हमें जल संकट, प्रदूषण एवं खाद्य संकट का सामना करना पड़ेगा। इससे हम कई बीमारियों का शिकार भी हो सकते हैं।
2. पर्यावरण संरक्षण – स्वस्थ जीवन हेतु हवा, पानी एवं स्वच्छ वातावरण का होना अनिवार्य है। इसलिए हमें इसे स्वच्छ रखना चाहिए।
3. संस्कृति और विरासत का संरक्षक – अपने देश की महत्ता बनाए रखने के लिए देश की सांस्कृतिक धरोहर को कभी आँच नहीं आने देना चाहिए। हमारी परंपराएँ, भाषाएँ और रहन-सहन को सदा बनाए रखना चाहिए। यह भी सत्य है कि नवीन को अपनाना चाहिए लेकिन प्राचीन को भुलाया भी नहीं जाना चाहिए। उसी में भली-भाँति परिवर्तन कर नया स्वरूप देना चाहिए।
4. ज्ञान और नैतिक मूल्यों का संरक्षण – विद्वानों के ज्ञान और नैतिक मूल्यों को अक्षुण्ण बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। इन्हीं के आधार पर नवीनता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। इसलिए इनके महत्व को कभी खोना नहीं चाहिए।
5. सुरक्षा एवं शांति का संरक्षण- देश में शांति और सुरक्षा रहेगी, तभी विकास संभव है। हिंसा, आतंकवाद और असुरक्षा के माहौल में देश कभी विकास की ओर नहीं बढ़ सकता।

कविता की रचना

'जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,
पाया जिसमें दाना-पानी।
हैं माता-पिता बंधु जिसमें,
हम हैं जिसके राजा-रानी।।"

इन पंक्तियों के अंतिम शब्दों को ध्यान से देखिए। 'दाना-पानी' और 'राजा-रानी' इन शब्दों की अंतिम ध्वनि एक-सी है। इस विशेषता को 'तुक मिलाना' कहते हैं। अब नीचे दिए गए प्रश्नों पर पाँच-पाँच के समूह में मिलकर चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए।

(क) शब्दों के तुक मिलाने से कविता में क्या विशेष प्रभाव पड़ा है?

उत्तर:

'दाना-पानी' और 'राजा-रानी' शब्दों के तुक मिलाने से कविता में लयबद्धता आई है और शब्द प्रभावी बने हैं।

(ख) कविता को प्रभावशाली बनाने के लिए और क्या-क्या प्रयोग किए गए हैं?

उत्तर:

कविता को चार-चार पंक्तियों के रूप में देकर अर्थपूर्ण बनाया गया है।

1. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग किया गया है। जैसे- बहती जिसमें रस – धार।
2. है और हैं का प्रयोग कुछ पंक्तियों में पहले करके कविता के शब्दों को उभारा गया है। जैसे- है काल- दीप जलता हरदम।

आपकी कविता

देश-प्रेम से जुड़े अपने विचारों को आधार बनाते हुए कविता को आगे बढ़ाइए-

वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
…………………………..
…………………………..
…………………………..

उत्तर:

वह हृदय नहीं है पत्थर है
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।
भूखे को जो खाना दे न सके
द्ररिद्र का सहारा बन पाए न
धन में डूबकर रहे जो सोए
सारे सपने बिखर उसके रोएँ

त्याग बिना ही जीता जाए
तिरंगा देख न झुक पाए
अपनी आन-बान-शान में भरमाए
देश का कुछ सोच न पाए
वह हृदय नहीं है, पत्थर है
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं

भाषा की बात

(क) शब्द से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'स्वदेश' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए। फिर मित्रों से मिलाकर अपनी सूची बढ़ाइए-

उत्तर:

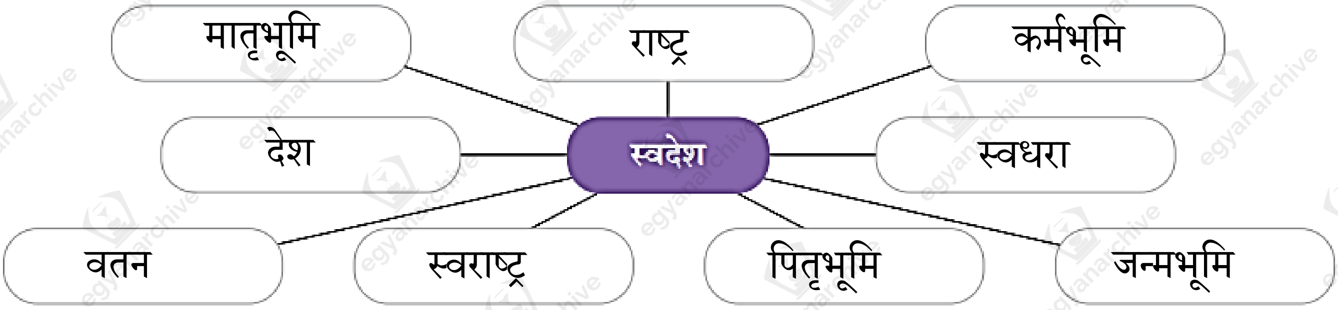

(ख) विराम चिह्नों को समझें

"जो चल न सका संसार-संग"
"बहती जिसमें रस – धार नहीं"
'पाया जिसमें दाना-पानी
"हैं माता – पिता बंधु जिसमें"
"हम हैं जिसके राजा-रानी"
"जिससे न जाति – उद्धार हुआ।"

कविता में आई हुई उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। इनमें कुछ शब्दों के बीच एक चिह्न (-) लगा है। इसे योजक चिह्न कहते हैं। योजक चिह्न दो शब्दों में परस्पर संबंध स्पष्ट करने तथा उन्हें जोड़कर लिखने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। कविता में संदर्भ के अनुसार योजक चिह्नों के स्थान पर का, की, के और में से कौन-से शब्द जोड़ेंगे जिससे अर्थ स्पष्ट हो सके। लिखिए।

(संकेत-'जो चल न सका संसार के संग')

उत्तर:

कविता में का, के, की, योजक चिह्नों से संबंधित पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

(क) जो चल न सका संसार-संग

उत्तर: जो चल न सका संसार **के** संग।

(ख) बहती जिसमें रस-धार नहीं

उत्तर: बहती जिसमें रस **की** धारा नहीं ।

(ग) जिससे न जाति – उद्धार हुआ।

उत्तर: जिससे न जाति **का** उद्धार हुआ।

(घ) है काल-दीप जलता हरदम।

उत्तर: है काल **का** दीप जलता हरदम ।

(ग) शब्द – मित्र

“ है जान एक दिन जाने को”

“ है काल- दीप जलता हरदम”

उपर्युक्त पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन दोनों पंक्तियों में ‘है’ शब्द पहले आया है जिसके कारण कविता में लयात्मकता आ गई है। यदि ‘है’ का प्रयोग पंक्ति के अंत में किया जाए तो यह गद्य जैसी लगने लगेगी, जैसे-

‘जान एक दिन जाने को है।’

‘काल-दीप हरदम जलता है।’

• अब आप कविता में से ऐसी पंक्तियों को चुनिए जिनमें ‘है’ शब्द का प्रयोग पहले हुआ है। चुनी हुई पंक्तियों में शब्दों के स्थान बदलकर पुनः लिखिए।

उत्तर:

1. वह हृदय नहीं है, पत्थर है।
   स्थान बदलकर - वह हृदय पत्थर है।
2. हैं जिसके राजा-रानी ।।
   स्थान बदलकर - जिसके राजा-रानी हैं।
   (नोट – मुख्य रूप से है के प्रयोग यही पंक्ति है)
3. नव रत्न दिये हैं लासानी ।
   स्थान बदलकर - लासानी नव रत्न दिए हैं।
4. जिस पर है दुनिया दीवानी ।
   स्थान बदलकर - जिस पर दुनिया दीवानी है।
5. उस पर है नहीं पसीजा जो,
   स्थान बदलकर - जो उस पर नहीं पसीजा है।
6. क्या है वह भू का भार नहीं ।
   स्थान बदलकर - क्या वह भू का भार नहीं है?

7. निश्चित है निस्संशय निश्चित।
स्थान बदलकर - निस्संशय निश्चित है।
8. जल जाना है परवानों को।
स्थान बदलकर - परवानों को जल जाना है।
9. सब कुछ है अपने हाथों में।
स्थान बदलकर - सब कुछ अपने हाथों में है।

• अब नीचे दी गई पंक्तियों में 'है, हैं' शब्द का प्रयोग पहले करके पंक्तियों को पुनः लिखिए और देखिए कि इससे पंक्तियों के सौंदर्य में क्या परिवर्तन आया है। अपने साथियों से चर्चा कीजिए।
"जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,
जिस पर है दुनिया दीवानी।।"

उत्तर:
जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,
हैं मरते जिस पर ज्ञानी।
जिस पर है दुनिया दीवानी
है जिस पर दुनिया दीवानी।।
इन पंक्तियों में हैं और है का प्रयोग पहले अर्थात् वाक्य के प्रारंभ में करने से वाक्य प्रभावी बन गए हैं।

(घ) समानार्थी शब्द
कविता से चुनकर कुछ शब्द निम्न तालिका में दिए गए हैं। दिए गए शब्दों से इनके समानार्थी शब्द ढूँढ़कर तालिका में दिए गए रिक्त स्थानों में लिखिए।

भू	दीप	हृदय	तलवार	दुनिया	पत्थर

समानार्थी शब्द

दिल, पाहन, प्रदीप, धरा, जग, असि, पृथ्वी, संसार, कृपाण, जी, दीपक, पाषाण

उत्तर:

भू	दीप	हृदय	तलवार	दुनिया	पत्थर
धरा	दीपक	दिल	असि	संसार	पाषाण
पृथ्वी	प्रदीप	जी	कृपाण	जग	पाहन

समानार्थी शब्द

दिल, पाहन, प्रदीप, धरा, जग, असि, पृथ्वी, संसार, कृपाण, जी, दीपक, पाषाण

कविता का शीर्षक

"वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेशी का प्यार नहीं।"

इस कविता का शीर्षक है 'स्वदेश'। कई बार कवि कविता की किसी पंक्ति को ही कविता का शीर्षक बनाते हैं। यदि आपको भी इस कविता की किसी एक पंक्ति को चुनकर नया शीर्षक देना हो तो आप कौन-सी पंक्ति चुनेंगे और क्यों।

उत्तर:

'वह हृदय नहीं है पत्थर है' क्योंकि पूरी कविता में कवि ने यह संदेश दिया है कि जिस हृदय में अपने देश के लिए प्रेम नहीं है, वह पत्थर के समान है।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। उन चित्रों पर सही (✓) का चिह्न लगाइए जिन्हें आप 'स्वदेश प्रेम' की श्रेणी में रखना चाहेंगे?

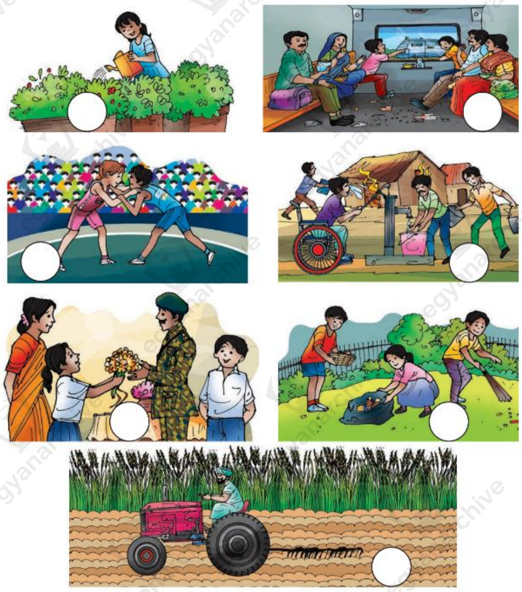

उत्तरः

देश को हरा-भरा रखने का संदेश

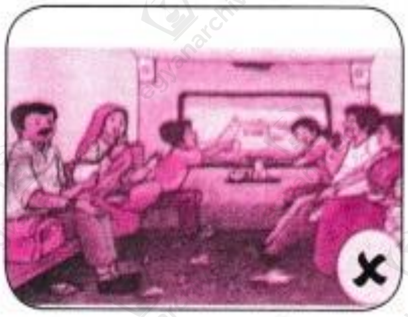

रेलगाडी में कूड़ा-कर्कट न फैलाने का संदेश

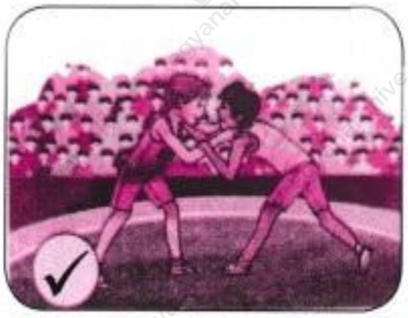

खेलकूद को बढ़ावा देने का संदेश

यदि किसी पर मुश्किल आ जाए तो मिल-जुल कर उसकी सहायता करने का संदेश

सैनिकों का सम्मान करने का संदेश

देश को स्वच्छ रखने का संदेश

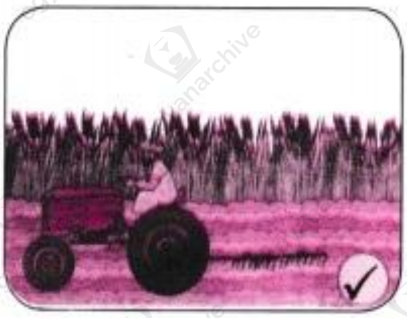

खूब फसलें उगाने का संदेश

दरिद्रों के प्रति दयाभाव रखने का संदेश

वृद्धों के साथ समय बिताने का संदेश

सार्वजनिक स्थलों पर लिखकर या व्यर्थ के चित्र बनाकर गंदा न करने का संदेश

राष्ट्रीय ध्वज को सदा सम्मान देने का संदेश

पंक्तिबद्ध खड़े होकर शांतिपूर्वक कार्य करने का संदेश

हरियाली बनाए रखने का संदेश

बिजली को व्यर्थ न गँवाने का संदेश

आपस में झगड़ा न करने का संदेश

(ख) अब आप अपने उत्तर के पक्ष में तर्क भी दीजिए।

उत्तर:

सभी विद्यार्थी अपनी योग्यतानुसार तर्क दें कि उन्होंने इन तस्वीरों पर सही और गलत का चिन्ह क्यों लगाया है?

हमारे अस्त्र-शस्त्र

'सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।"

देश की सीमा पर सैनिक सुरक्षा प्रहरी की भाँति खड़े रहते हैं। वे बुरी भावना से अतिक्रमण करने वाले का सामना तोप, तलवार, बंदूक आदि से करते हैं।

आप बताइए कि निम्नलिखित स्वदेश प्रेमियों के अस्त्र-शस्त्र क्या होंगे?

• विद्यार्थी –

उत्तर:

विद्यार्थी – पुस्तकें, कापियाँ, पेन, पेंसिलें, रबड़ शार्पनर, फुटा, परकार (वर्तमान समय में लैपटॉप, मोबाइल, इंटरनेट भी) आदि।

• अध्यापक ....

उत्तर:

अध्यापक – श्वेत/श्याम पट्ट, मार्कर या चॉक, विभिन्न पुस्तकें (वर्तमान समय में लैपटॉप, मोबाइल एवं इंटरनेट) आदि।

• कृषक ....

उत्तर: कृषक – हल, कल्टीवेटर, सीड ड्रिल, हैरो, ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, स्प्रेयर, पावर टिलर, रोटावेयर आदि।

• चिकित्सक ....

उत्तर: चिकित्सक – स्टेथोस्कोप, थर्मामीटर, बी. पी. कफ, एवं अन्य सर्जिकल उपकरण।

• वैज्ञानिक ....

उत्तर: वैज्ञानिक – अमीटर अल्टीमीटर एनेमोमीटर, बैरोमीटर, क्रोनोमीटर, वर्नियर कैलिपर्स, माइक्रोमीटर, थर्मामीटर, वोल्यूमेट्रिक, कैमरा, नीम बैलेंस आदि।

• श्रमिक ....

उत्तर: श्रमिक – छेनी, हथौड़ा, फावड़ा, आरी, टेप माप, कुदाल, दराती, बेलचा आदि।

• पत्रकार ....

उत्तर: पत्रकार – पेन, कॉपी, मोबाइल, फोन, कंप्यूटर, रिकार्डिंग, उपकरण, साक्षात्कार, दस्तावेज आदि।

अपनी भाषा अपने गीत

(क) कक्षा में सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी भाषा में देश – प्रेम से संबंधित कविताओं और गीतों का संकलन करें।

उत्तर:

इन सभी का संकलन करके एक फाइल बनाएँ। (परियोजना कार्य)

(ख) किसी एक गीत की कक्षा में संगीतात्मक प्रस्तुति भी करें।

उत्तर:

यह प्रस्तुति संगीत विभाग की ओर से करवाएँ। राष्ट्रीय त्योहारों 15 अगस्त, 26 जनवरी एवं 2 अक्टूबर को इनको गाकर प्रस्तुत करें। *(केवल प्रस्तुति हेतु)*

साझी समझ

आपने 'स्वदेश' कविता और 'खादी गीत' का उपर्युक्त अंश पढ़ा। स्वतंत्रता आंदोलन के समय लिखी गई दोनों कविताओं में देश-प्रेम किस प्रकार अभिव्यक्त हुआ है? साथियों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए। साथ ही 'खादी गीत' पूरी कविता को पुस्तकालय या इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए।

उत्तर:

'स्वदेश' कविता में देश-प्रेम की भावना उजागर होती है कि हमारे हृदय में स्वदेश प्रेम होना चाहिए। जिसके हृदय में देश के प्रति प्रेम न हो वह मृत के समान है।

'खादी गीत' यह दर्शाता है कि भारत की पहचान 'खादी' अर्थात जब हाथ में बुना सूती कपड़े का वस्त्र धारण करते हैं तो उसे निर्मित करने वाली माँ. बहनों, भाइयों का प्रेम उसमें झलकता है। अपनेपन का अहसास होता है। ऐसा अहसास होने लगता है कि यह देश-प्रेम का ही प्रतीक है।

खोजबीन के लिए

नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों का प्रयोग कर आप देश-प्रेम और स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित रचनाएँ पढ़ सकते हैं-

- **सारे जहाँ से अच्छा**

  https://www.youtube.com/watch?v=xestTq6jdjI
- **दीवानों की हस्ती**

  https://www.youtube.com/watch?v=n4LOnShHEC4
- **झाँसी की रानी**

  https://www.youtube.com/watch?v=QpTL2qBOiwc